Gyansindhu Coaching Classes

Join – Whatsapp Channel By Link

Subscribe for Live Class

कक्षा 10 – हिंदी

मैराथन क्लास

संस्कृत गद्यांश पद्यांश

'वीरः वीरेण पूज्यते'

सन्दर्भ - प्रस्तुत नाट्य-खण्ड हमारी पाठ्य-पुस्तक के **'संस्कृत-खण्ड'** के **'वीरः वीरेण पूज्यते'** नामक पाठ से लिया गया है।

- **(स्थानम् - अलक्षेन्द्रस्य सैन्य शिविरम्) अलक्षेन्द्रः आम्भीकः च आसीनौ वर्तते।**

(स्थान - सिकन्दर का सैनिक शिविर) सिकन्दर और आम्भीक बैठे हैं।

- **वन्दिनं पुरुराजम् अग्रेकृत्वा एकतः प्रविशति यवन-सेनापतिः।**

बन्दी पुरुराज को आगे करके एक ओर से यवन सेनापति प्रवेश करता है।

- **सेनापतिः: विजयतां सम्राट्।**

सेनापति - सम्राट् की जय हो !

- **पुरुराजः: एष भारतवीरोऽपि यवनराजम् अभिवादयते।**

पुरुराज - यह भारतवीर भी यवनराज का अभिवादन करता है।

- **अलक्षेन्द्रः: (साक्षेपम्) अहो ! बन्धनगतः अपि आत्मानं वीर इति मन्यसे पुरुराज?**

सिकन्दर –(आक्षेप सहित) अरे ! पुरुराज ! बन्धन में पड़े हुए भी अपने को वीर मानते हो?

- **पुरुराजः: यवनराज ! सिंहस्तु सिंह एव, वने वा भवतु पञ्जरे वा।**

पुरुराज हे यवनराज ! सिंह तो सिंह ही है, वन में हो अथवा पिंजरे में।

- **अलक्षेन्द्रः: किन्तु पञ्जरस्थः सिंहः न किमपि पराक्रमते।**

सिकन्दर – किन्तु पिंजरे में पड़ा हुआ सिंह कुछ भी पराक्रम नहीं करता है।

- **पुरुराजः: पराक्रमते, यदि अवसरं लभते। अपि च यवनराज !**

पुरुराज - पराक्रम करता है, यदि अवसर मिलता है। और हे यवनराज !

- **बन्धनं मरणं वापि जयो वापि पराजयः।**

"बन्धन हो अथवा मृत्यु, जय हो अथवा पराजय ; "

- **उभयत्र समो वीरः वीर भावो हि वीरता।।**

वीर पुरुष दोनों स्थितियों में समान रहता है। वीर - भाव को ही 'वीरता 'कहते हैं।

- **आम्भिराजः सम्राट ! वाचाल एष हन्तव्यः।**

आम्भिराज - सम्राट् ! यह वाचाल मार डालने योग्य है।

- **सेनापतिः: आदिशतु सम्राट्।**

सिकन्दर –सेनापति - सम्राट् आज्ञा दें।

- **अलक्षेन्द्रः: अथ मम मैत्रीसन्धे अस्वीकरणे तव किम् अभिमतम् आसीत् पुरुराज !**

सिकन्दर - हे पुरुराज ! मेरी मैत्री - सन्धि के अस्वीकार करने में तुम्हारी क्या इच्छा थी?

- **पुरुराजः: स्वराज्यस्य रक्षा, राष्ट्रद्रोहाच्च मुक्तिः।**

पुरुराज - अपने राज्य की रक्षा और राष्ट्रद्रोह से मुक्ति।

- **अलक्षेन्द्रः: मैत्रीकरणेऽपि राष्ट्रद्रोहः?**

सिकन्दर - मित्रता करने में भी राष्ट्रद्रोह?

- **पुरुराजः: आम् राष्ट्रद्रोहः यवनराज !**

पुरुराज - हाँ। राष्ट्रद्रोह। यवनराज !

- **एकम् इदं भारतं राष्ट्रम्, बहूनि चात्र राज्यान्, बहवश्च शासकाः।**

यह भारत राष्ट्र एक है, और यहाँ बहुत - से राज्य हैं और बहुत - से शासक हैं।

- **त्वं मैत्रीसन्धिना तान् विभज्य भारतं जेतुम् इच्छसि।**

तुम मैत्री - सन्धि से उन्हें विभाजित करके भारत को जीतना चाहते हो

- **आम्भीकः चास्य प्रत्यक्षं प्रमाणम्।**

और आम्भीक इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

- **अलक्षेन्द्रः: भारतम् एकं राष्ट्रम् इति तव वचनं विरुद्धम्।**

सिकन्दर - भारत एक राष्ट्र है, तुम्हारा यह कथन गलत है।

- **इह तावत् राजानः जनाः च परस्परं द्रुह्यन्ति।**

यहाँ राजा और प्रजा परस्पर द्वेष करते हैं

- **पुरुराजः: तत् सर्वम् अस्माकम् आन्तरिकः विषयः।**

पुरुराज - वह सब हमारा आन्तरिक मामला है।

- **बाह्यशक्तेः तत्र हस्तक्षेपः असह्यः यवनराज !**

हे यवनराज ! उसमें बाह्य शक्ति का हस्तक्षेप सहन किए जाने योग्य नहीं है।

- **पृथग्धर्माः, पृथग्भाषाभूषा अपि वयं सर्वे भारतीयाः।।**

पृथक् धर्म, पृथक् भाषा, पृथक् वेशभूषा होने पर भी हम सब भारतीय हैं।

- **विशालम् अस्माकं राष्ट्रम्।**

हमारा राष्ट्र विशाल है

- **तथाहि –**

कहा गया है -

- **उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।**

जो समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में स्थित है

- **वर्षं तद् भारतं नाम भारती तत्र सन्ततिः।।**

क्योंकि, वह भारत नाम का देश है, जहाँ की सन्तान भारतीय है।

- **अलक्षेन्द्रः: अथ मे भारतविजयः दुष्करः।**

सिकन्दर - तो फिर मेरी भारत - विजय कठिन है।

- **पुरुराजः: न केवलं दुष्करः असम्भवोऽपि।**

पुरुराज - न केवल कठिन है, असम्भव भी है।

- **अलक्षेन्द्रः: (सरोषम्) दुर्विनीत, किं न जानासि,**

सिकन्दर – (रोषपूर्वक) हे दुष्ट | क्या तुम नहीं जानते हो

- **इदानीं विश्वविजयिनः अलक्षेन्द्रस्य अग्रे वर्तसे?**

इस समय (तुम) विश्व - विजेता सिकन्दर के सामने हो?

- **पुरुराज:: जानामि, किन्तु सत्यं तु सत्यम् एव यवनराज!**

पुरुराज:- जानता हूँ ; किन्तु यवनराज सत्य तो सत्य ही है।

- **भारतीया: वयं गीताया: सन्देशं न विस्मराम:।**

पुरुराज - हम भारतीय गीता के सन्देश को नहीं भूले हैं।

- **अलक्षेन्द्र:: कस्तावत् गीताया: सन्देश:?**

सिकन्दर - गीता का सन्देश क्या है?

- **पुरुराज:: -श्रूयताम्।**

पुरुराज:- सुनिए

- **हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं**

मर गए तो स्वर्ग प्राप्त करोगे

- **जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।**

अथवा जीत गए तो पृथ्वी का भोग करोगे।

- **तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय**

इसलिए हे अर्जुन !

- **युद्धाय कृतनिश्चयः।।**

(इच्छारहित, मोहरहित और सन्तापरहित) होकर युद्ध के लिए निश्चय करो।

- **अलक्षेन्द्रः: (किमपि विचिन्त्य) अलं तव गीतया।**

सिकन्दर –(कुछ सोचकर), अपनी गीता को रहने दो।

- **पुरुराज! त्वम् अस्माकं बन्दी वर्तसे।**

पुरुराज, तुम हमारे बन्दी हो।

- **ब्रूहि कथं त्वयि वर्तितव्यम्।**

बोलो, तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया जाए?

- **पुरुराजः: यथैकेन वीरेण वीरं प्रति।**

पुरुराज जैसा एक वीर, (दूसरे) वीर के प्रति करता है।

- **अलक्षेन्द्रः: (पुरोः वीरभावेन हर्षितः)**

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

सिकन्दर- (पुरु के वीर - भाव से प्रसन्न होकर)

- **साधु वीर ! साधु ! नूनं वीर असि।**

वीर ! ठीक है ! तुम निश्चय ही वीर हो।

- **धन्यः त्वं, धन्या ते मातृभूमिः।**

तुम धन्य हो, तुम्हारी मातृभूमि धन्य है।

- **(सेनापतिम् उद्दिश्य) सेनापते !**

(सेनापति को लक्ष्य करके) सेनापति !

- **सेनापतिः: सम्राट !**

सेनापति - सम्राट् !

- **अलक्षेन्द्रः:: वीरस्य पुरुराजस्य बन्धनानि मोचय।**

सिकन्दर – वीर पुरुराज के बन्धन खोल दो

- **सेनापतिः: यत् सम्राट् आज्ञापयति।**

सेनापति – सम्राट की जो आज्ञा।

- **अलक्षेन्द्रः: (एकेन हस्तेन पुरोः द्वितीयेन च आम्भीकस्य हस्तं गृहीत्वा)**

सिकन्दर- (एक हाथ से पुरु के और दूसरे हाथ से आम्भीक के हाथ को पकड़कर)

- **वीर पुरुराज ! सखे आम्भीक ! इतः परं वयं सर्वे समानमित्राणि,**

वीर पुरुराज ! मित्र आम्भीक ! अब से हम सब समान मित्र हैं।

- **इदानीं मैत्रीमहोत्सवं सम्पादयामः।**

अब हम मैत्री - महोत्सव मनाते हैं।

- **(सर्वे निर्गच्छन्ति)**

(सब निकल जाते हैं।)

'प्रबुद्धो ग्रामीण:'

- **एकदा बहव: जना: धूमयानम् (रेल) आरुह्य नगरं प्रति गच्छन्ति स्म।**
  एक बार बहुत - से मनुष्य रेलगाड़ी पर चढ़कर नगर की ओर जा रहे थे।
- **तेषु केचित् ग्रामीणा: केचिच्च नागरिका: आसन्।**
  उनमें कुछ ग्रामीण और कुछ शहरी थे।
- **मौनं स्थितेषु तेषु एक: नागरिक: ग्रामीणान् उपहसन् अकथयत्**
  उनके मौन रहने पर एक शहरी ने ग्रामीणों का उपहास करते हुए कहा --
- **"ग्रामीणा: अद्यापि पूर्ववत् अशिक्षिता: अज्ञाश्च सन्ति।**
  "ग्रामीण आज भी पहले की तरह अशिक्षित और मूर्ख हैं।
- **न तेषां विकास: अभवत् न च भवितुं शक्नोति।**
  न उनका विकास हुआ और न हो सकता है। "
- **"तस्य तादृशं जल्पनं श्रुत्वा कोऽपि चतुर: ग्रामीण: अब्रवीत्,**
  उसके इस प्रकार के कथन को सुनकर कोई चतुर ग्रामीण बोला—
- **"भद्र नागरिक! भवान् एव किञ्चित् ब्रवीतु**

"हे शिष्ट शहरी, आप ही कुछ कहें;

- **यतो हि भवान् शिक्षितः बहुज्ञः च अस्ति।**
  क्योंकि आप ही शिक्षित और बहुत जानकार हैं।
- **'इदम् आकर्ण्य स नागरिकः सदर्प ग्रीवाम् उन्नमय्य अकथयत्,**
  "यह सुनकर उस शहरी ने घमण्ड के साथ गर्दन को ऊँचा उठाकर कहा-
- **"कथयिष्यामि, परं पूर्वं समयः विधातव्यः।"**
  "कहूँगा ; किन्तु पहले (कुछ) शर्त बद लेनी चाहिए।"
- **तस्य तां वार्ता श्रुत्वा स चतुरः ग्रामीण अकथयत्,**
  "उसकी इस बात को सुनकर उस चतुर ग्रामीण ने कहा-
- **"भोः वयम् अशिक्षिताः भवान् च शिक्षितः,**
  "अरे हम सब अशिक्षित हैं और आप शिक्षित हैं ;
- **वयम् अल्पज्ञा भवान् च बहुज्ञः,**
  हम कम जानते हैं और आप बहुत जानते हैं
- **इत्येवं विज्ञाय अस्माभिः समयः कर्त्तव्यः,**

ऐसा समझकर हम लोगों से शर्त लगानी चाहिए

- **वयं परस्परं प्रहेलिकां प्रक्ष्यामः।**

  हम परस्पर पहेली पूछेगे।

- **यदि भवान् उत्तरं दातुं समर्थः न भविष्यति**

  यदि आप उत्तर देने में समर्थ न होंगे

- **तदा भवान् दशरूप्यकाणि दास्यति।**

  तो आप दस रुपये देंगे।

- **यदि वयम् उत्तरं दातुं समर्थाः न भविष्यामः**

  यदि हम उत्तर देने में समर्थ न होंगे,

- **तदा दशरूप्यकाणाम् अर्धं पञ्चरूप्यकाणि दास्यामः। "**

  तो (हम) दस रुपये के आधे (अर्थात्) पाँच रुपये देंगे। "

- **"आम्, स्वीकृतः समयः",**

  "हाँ, शर्त स्वीकार है"

- **इति कथिते तस्मिन् नागरिके स ग्रामीणः नागरिकम् अवदत्,**

उस शहरी द्वारा ऐसा कहे जाने पर, उस ग्रामीण ने शहरी से कहा-

- **"प्रथमं भवान् एव पृच्छतु।"नागरिकश्च तं ग्रामीणम् अकथयत्, "त्वमेव प्रथमं पृच्छ "इति।**
  "पहले आप ही पूछे। और शहरी ने उस ग्रामीण से कहा- तुम ही पहले पूछो।
- **इदं श्रुत्वा स ग्रामीणः अवदत् "युक्तम्, अहमेव प्रथम पृच्छामि। "**
  यह सुनकर वह ग्रामीण बोला"ठीक है, मैं ही पहले पूछता हूँ। "
- **अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः।**
  "बिना पैरों का है, किन्तु दूर तक जाता है; साक्षर (अक्षरयुक्त) है, किन्तु पण्डित नहीं है।
- **अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति स पण्डितः।।**
  मुखविहीन होने पर भी स्पष्ट बोलनेवाला है इसे जो जानता है, वह पण्डित है।
- **अस्या उत्तरं ब्रवीतु भवान्।**
  आप इसका उत्तर दें।
- **नागरिकः बहुकालं यावत् अचिन्तयत्, परं प्रहेलिकायाः उत्तर दातुं समर्थः न अभवत्,**
  शहरी ने बहुत देर तक विचार किया ; किन्तु (वह) पहेली का उत्तर देने में समर्थ नहीं हुआ ;
- **अतः ग्रामीणम् अवदत्, अहम् अस्याः प्रहेलिकायाः उत्तरं न जानामि।**

अतः ग्रामीण से बोला- "मैं इस पहेली का उत्तर नहीं जानता हूँ।"

- **इदं श्रुत्वा ग्रामीणः अकथयत्, यदि भवान् उत्तरं न जानाति, तर्हि ददातु दशरूप्यकाणि।**

यह सुनकर ग्रामीण ने कहा, यदि आप उत्तर नहीं जानते हैं, तो दस रुपये दें।

- **अतः म्लानमुखेन नागरिकेण समयानुसारं दशरूप्यकाणि दत्तानि।**

अत: खिन्न मुखवाले शहरी ने शर्त के अनुसार दस रुपये दिए।

- **पुनः ग्रामीणोऽब्रवीत्, "इदानीं भवान् पृच्छतु प्रहेलिकाम्। "**

फिर ग्रामीण बोला- "अब आप पहेली पूछे।"

- **दण्डदानेन खिन्नः नागरिकः बहुकालं विचार्य न काञ्चित् प्रहेलिकाम् अस्मरत्,**

दण्ड देने से दुःखी शहरी बहुत समय तक विचार करके भी किसी पहेली को याद न कर सका ;

- **अतः अधिकं लज्जमानः अब्रवीत्, "स्वकीयायाः प्रहेलिकायाः त्वमेव उत्तरं ब्रूहि।"**

अतः अत्यधिक लज्जित होता हुआ बोला 'अपनी पहेली का उत्तर तुम ही दो !

- **तदा स ग्रामीणः विहस्य स्वप्रहेलिकायाः सम्यक् उत्तरम् अवदत् 'पत्रम् 'इति**

"तब उस ग्रामीण ने हँसकर अपनी पहेली का सही - सही उत्तर दिया "पत्र "।

- **यतो हि इदं पदेन विनापि दूरं याति, अक्षरैः युक्तमपि न पण्डितः भवति।**

क्योंकि वह पैरों के बिना भी दूर तक जाता है, अक्षरों से युक्त होने पर भी पण्डित (विद्वान) नहीं होता।

- **एतस्मिन्नेव काले तस्य ग्रामीणस्य ग्रामः आगतः।**
  इसी समय उस ग्रामीण का गाँव आ गया।
- **स विहसन् रेलयानात् अवतीर्य स्वग्राम प्रति अचलत्।**
  वह हँसता हुआ रेलगाड़ी से उतरकर अपने गाँव की ओर चल पड़ा।
- **नागरिकः लज्जितः भूत्वा पूर्ववत् तूष्णीम् अतिष्ठत्।**
  शहरी लज्जित होकर पहले की तरह चुप बैठ गया।
- **सर्वे यात्रिणः वाचालं तं नागरिकं दृष्ट्वा अहसन्।**
  सारे यात्री उस वाचाल शहरी को देखकर हँसने लगे।
- **तदा स नागरिकः अन्वभवत् यत् ज्ञानं सर्वत्र सम्भवति।**
  तब उसने अनुभव किया कि ज्ञान सर्वत्र सम्भव है।
- **ग्रामीणाः अपि कदाचित् नागरिकेभ्यः प्रबुद्धतराः भवन्ति।**

'देशभक्तः चन्द्रशेखरः

(प्रथमं दृश्यम्)

▪ **(स्थानम् - वाराणसीन्यायालयः, न्यायाधीशस्य पीठे एकः दुर्धर्षः पारसीकः तिष्ठति,**

(स्थान - वाराणसी, न्यायालय। न्यायाधीश के आसन पर एक उच्छृखल पारसी बैठा है।

▪ **आरक्षकाः चन्द्रशेखरं तस्य सम्मुखम् आनयन्ति।**

सिपाही चन्द्रशेखर को उसके सामने लाते हैं।

▪ **अभियोगः प्रारभते।**

मुकदमा आरम्भ होता है।

▪ **चन्द्रशेखरः पुष्टाङ्गः, गौरवर्णः, षोडशवर्षीयः किशोरः।**

चन्द्रशेखर पुष्ट अंगोंवाला, गोरे रंग का सोलह वर्षीय किशोर है।

▪ **आरक्षकः: श्रीमन् ! अयम् अस्ति चन्द्रशेखरः। अयं राजद्रोही।**

सिपाही – श्रीमन् ! यह चन्द्रशेखर है। यह राजद्रोही है।

▪ **गतदिने अनेनैव असहयोगिनां सभायाम् एकस्य आरक्षकस्यदुर्जयसिंहस्य मस्तके**

पिछले दिन इसने ही असहयोगियों की सभा में एक सिपाही दुर्जयसिंह के मस्तक पर

▪ **प्रस्तरखण्डेन प्रहारः कृतः येन दुर्जयसिंहः आहतः।**

पत्थर के टुकड़े से प्रहार किया,जिससे दुर्जयसिंह घायल हो गया।

▪ **न्यायाधीशः: (तं बालकं विस्मयेन विलोकयन्) रे बालक ! तव किं नाम?**

न्यायाधीश- (उस बालक को आश्चर्य से देखते हुए) रे बालक! तेरा क्या नाम है?

▪ **चन्द्रशेखरः: आजादः (स्थिरीभूय)।**

चन्द्रशेखर आजाद (दृढ़ होकर)।

▪ **न्यायाधीशः: तव पितुः किं नाम?**

न्यायाधीश - तेरे पिता का क्या नाम है?

▪ **चन्द्रशेखरः – स्वतंत्रः**

चन्द्रशेखर - स्वतन्त्र।

▪ **न्यायाधीशः: त्वं कुत्र निवससि?**

न्यायाधीश - तुम कहाँ रहते हो?

▪ **तव गृहं कुत्रास्ति?**

तुम्हारा घर कहाँ है?

▪ **चन्द्रशेखरः: कारागार एव मम् गृहम्।**

चन्द्रशेखर कारागार ही मेरा घर है।

▪ **न्यायाधीशः: (स्वगतम्) कीदृशः प्रमत्तः स्वतन्त्रतायै अयम्?**

न्यायाधीश- (अपने मन में) यह स्वाधीनता के लिए कितना मतवाला है?

▪ **(प्रकाशम्) अतीव धृष्टः, उद्दण्डश्चायं नवयुवकः।**

(प्रकट रूप में) यह नवयुवक अत्यधिक ढीठ और उद्दण्ड है।

▪ **अहम् इमं पञ्चदश कशाघातान् दण्डयामि।**

मैं इसे पन्द्रह कोड़ों की सजा देता हूँ।

▪ **चन्द्रशेखरः नास्ति चिन्ता।**

चन्द्रशेखर चिन्ता नहीं है।

(द्वितीयं दृश्यम्)

▪ **(ततः दृष्टिगोचरो भवतः कौपीनमात्रावशेषः, फलकेन दृढं बद्धः चन्द्रशेखरः)**

(तब केवल लँगोट बाँधे, तख्ते से दृढ़ता से बंधे हुए चन्द्रशेखर

▪ **कशाहस्तेन चाण्डालेन अनुगम्यमानः, कारावासाधिकारी गण्डासिंहश्च।)**

और कोड़ा हाथ में लिए चाण्डाल का अनुगमन करते हुए जेलर गण्डासिंह दिखाई पड़ते हैं।)

▪ **गण्डासिंहः: (चाण्डालं प्रति) दुर्मुख ! मम आदेशसमकालमेव कशाघातः कर्त्तव्यः।**

गण्डासिंह- (चाण्डाल से) हे दुर्मुख ! मेरे द्वारा आज्ञा देते ही कोड़े लगाना।

▪ **(चन्द्रशेखरं प्रति) रे दुर्विनीत युवक ! लभस्व इदानीं स्वाविनयस्य फलम्।**

(चन्द्रशेखर से) हे उद्दण्ड युवक। अब तू अपनी उद्दण्डता का फल प्राप्त कर।

▪ **कुरु राजद्रोहम्।**

कर राजद्रोह !

▪ **दुर्मुख ! कशाघातः एकः (दुर्मुखः चन्द्रशेखरं कशया ताडयति)।**

हे दुर्मुख ! एक कोड़ा मारो (दुर्मुख चन्द्रशेखर को कोड़े से मारता है)

▪ **चन्द्रशेखरः: जयतु भारतम्।**

चन्द्रशेखर – भारत की जय हो।

▪ **गण्डासिंहः: दुर्मुख ! द्वितीयः कशाघातः। (दुर्मुखः पुनः ताडयति।)**

गण्डासिंह हे दुर्मुख ! दूसरा कोड़ा (मारो)। (दुर्मुख फिर से पीटता है।)

▪ **ताडितः चन्द्रशेखरः पुनः पुनः 'भारतं जयतु 'इति वदति।**
पिटते हुए चन्द्रशेखर बार - बार 'भारतमाता की जय हो ', ऐसा कहते हैं।
▪ **(एवं स पञ्चदशकशाघातैः ताडितः)**
(इस प्रकार वे पन्द्रह कोड़ों से पीटे जाते हैं।)
▪ **यदा चन्द्रशेखरः कारागारात् मुक्तः बहिः आगच्छति,**
जब चन्द्रशेखर कारागार से मुक्त होकर बाहर आते हैं,
▪ **तदैव सर्वे जनाः तं परितः वेष्टयन्ति,**
तब सारे लोग उन्हें चारों ओर से घेर लेते हैं।
▪ **बहवः बालकाः तस्य पादयोः पतन्ति,**
बहुत - से बालक उनके पैरों पर गिर पड़ते हैं
▪ **तं मालाभिः अभिनन्दयन्ति च।**
और उनका मालाओं से अभिनन्दन करते हैं।
▪ **चन्द्रशेखरः: किमिदं क्रियते भवद्भिः?**
चन्द्रशेखर - आप लोग यह क्या कर रहे हैं?

- **वयं सर्वे भारतमातुः अनन्यभक्ताः।**

हम सभी भारतमाता के अनन्य भक्त हैं।

- **तस्याः शत्रूणां कृते मदीयाः, इमे रक्तबिन्दवः अग्निस्फुलिङ्गाः भविष्यन्ति।**

उसके शत्रुओं के लिए मेरी, ये रक्त की बूंदें अग्नि की चिनगारियाँ हो जाएंगी।

- **('जयतु भारतम्' इति उच्चैः कथयन्तः सर्वे गच्छन्ति)**

(भारत को जय हो 'ऐसा उच्च स्वर से कहते (नारे लगाते) हुए सब चले जाते हैं

'भारतीया संस्कृतिः'

- **मानव - जीवनस्य संस्करणं संस्कृतिः।**
- मानव - जीवन को संवारना ही संस्कृति है।
- **अस्माकं पूर्वजाः मानवजीवन संस्कर्तुं महान्तं प्रयत्नम् अकुर्वन्।**
- हमारे पूर्वजों ने मानव - जीवन को सँवारने के लिए महान् प्रयत्न किया था।
- **ते अस्माकं जीवनस्य संस्करणाय**
- उन्होंने हमारे जीवन को संवारने के लिए,
- **यान् आचारान् विचारान् च अदर्शयन् तत् सर्वम् अस्माकं संस्कृतिः।**
- जिन आचरणों और विचारों को प्रदर्शित किया, वह सब (ही) हमारी संस्कृति हैं।
- **'विश्वस्य स्रष्टा ईश्वरः एक '**
- "विश्व का रचयिता ईश्वर एक ही है "
- **इति भारतीय – संस्कृतेः मूलम्।**
- यह भारतीय संस्कृति का मूल है।

- **विभिन्नमतावलम्बिनः विविधैः नामभिः एकम् एव ईश्वरं भजन्ते।**
- विभिन्न मतों के अनुयायी अनेक नामों से एक ही ईश्वर का भजन करते हैं।
- **अग्निः, इन्द्रः, कृष्णः, करीमः, रामः, रहीमः, जिनः, बुद्धः, ख्रिस्तः, अल्लाहः**
- अग्नि, इन्द्र, कृष्ण, करीम, राम, रहीम, जिन, बुद्ध, ईसा, अल्लाह
- **इत्यादीनि नामानि एकस्य एव परमात्मनः सन्ति।**
- इत्यादि नाम एक ही ईश्वर के हैं।
- **तम् एव ईश्वरं जनाः गुरुः इत्यपि मन्यन्ते।**
- उसी ईश्वर को लोग 'गुरु 'के रूप में भी मानते हैं।
- **अतः सर्वेषां मतानां समभावः सम्मानश्च अस्माकं संस्कृतेः सन्देशः।**
- अतः सभी मतों के प्रति समान भाव और सम्मान (ही) हमारी संस्कृति का सन्देश है।
- **भारतीया संस्कृतिः तु सर्वेषां मतावलम्बिनां संगमस्थली।**
- भारतीय संस्कृति तो सभी मतों को मानने वालों की संगमस्थली है।
- **काले काले विविधाः विचाराः भारतीय-संस्कृतौ समाहिताः।**
- समय - समय पर भारतीय संस्कृति में विविध विचार आ मिले।

- **एषा संस्कृतिः सामासिकी संस्कृतिः**
- यह संस्कृति समन्वयात्मक संस्कृति है,
- **यस्याः विकासे विविधानां जातीनां सम्प्रदायानां विश्वासानांच योगदानं दृश्यते।**
- जिसके विकास में विविध जातियों, सम्प्रदायों और विश्वासों का योगदान दृष्टिगोचर होता है।
- **अतएव अस्माकं भारतीयानाम् एका संस्कृतिः एका च राष्ट्रीयता।**
- अतएव हम भारतीयों की एक संस्कृति और एक राष्ट्रीयता है।
- **सर्वेऽपि वयं एकस्याः संस्कृतेः समुपासकाः, एकस्य राष्ट्रस्य च राष्ट्रियाः।**
- हम सभी एक संस्कृति के उपासक हैं और एक राष्ट्र के नागरिक हैं।
- **यथा भ्रातरः परस्परं मिलित्वा सहयोगेन सौहार्देन च परिवारस्य उन्नतिं कुर्वन्ति,**
- जिस प्रकार भाई - भाई परस्पर मिलकर सहयोग और प्रेम से परिवार की उन्नति करते हैं,
- **तथैव अस्माभिः अपि सहयोगेन सौहार्देन च राष्ट्रस्य उन्नतिः कर्त्तव्या।**
- उसी प्रकार हमें भी सहयोग और प्रेम से राष्ट्र की उन्नति करनी चाहिए।
- **अस्माकं संस्कृतिः सदा गतिशीला वर्तते।**
- हमारी संस्कृति सदा गतिशील है।

- **मानवजीवनं संस्कर्तुम् एषा यथासमयं नवां नवां विचारधारां स्वीकरोति,**
- मानव - जीवन को शुद्ध करने के लिए यह समय - समय पर नई - नई विचारधारा को स्वीकार करती है
- **नवां शक्ति च प्राप्नोति।**
- और नई शक्ति प्राप्त करती है।
- **अत्र दुराग्रहः नास्ति,**
- यहाँ हठधर्मिता नहीं है।
- **यत् युक्तियुक्तं कल्याणकारि च तदत्र सहर्षं गृहीतं भवति।**
- जो उचित और कल्याणकारी है, वह यहाँ हर्षपूर्वक स्वीकार होता है।
- **एतस्याः गतिशीलतायाः रहस्यं मानव - जीवनस्य शाश्वतमूल्येषु निहितम्,**
- इसकी गतिशीलता का रहस्य मानव - जीवन के सदा रहनेवाले आदर्शों में निहित है ;
- **तद् यथा सत्यस्य प्रतिष्ठा, सर्वभूतेषु समभावः, विचारेषु औदार्यम्, आचारे दृढ़ता चेति।**
- जैसे कि सत्य की प्रतिष्ठा, सभी प्राणियों के प्रति समान भाव, विचारों में उदारता और आचरण की दृढ़ता में निहित है
- **एषा कर्मवीराणां संस्कृतिः।**

- यह कर्मवीरों की संस्कृति है।
- **'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः 'इति अस्याः उद्घोषः।**
- "इस लोक में कर्म करते हुए (मनुष्य) सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करें ", यह इसकी घोषणा है।
- **पूर्व कर्म, तदनन्तरं फलम् इति अस्माकं संस्कृते नियमः।**
- पहले कर्म और उसके बाद फल - यह हमारी संस्कृति का नियम है।
- **इदानीं यदा वयं राष्ट्रस्य नवनिर्माणे संलग्नाः स्मः |**
- इस समय जब कि हम राष्ट्र के नव - निर्माण में लगे हुए हैं|
- **निरन्तरं कर्मकरणम् अस्माकं मुख्यं कर्त्तव्यम्।**
- निरन्तर कर्म करना हमारा मुख्य कर्तव्य है।
- **निजस्य श्रमस्य फलं भोग्यं,**
- अपने परिश्रम का फल भोगने योग्य है,
- **अन्यस्य श्रमस्य शोषणं सर्वथा वर्जनीयम्।**
- दूसरे के परिश्रम का शोषण सब प्रकार से वर्जित है।
- **यदि विपरीतम् आचरामः,**

- यदि हम विपरीत आचरण करते हैं,
- **तदा न वयं सत्यं भारतीय - संस्कृतेः उपासकाः।**
- तब हम भारतीय संस्कृति के सच्चे उपासक नहीं है |
- **वयं तदैव यथार्थं भारतीयाः, यदा अस्माकम् आचारे विचारे च, अस्माकं संस्कृतिः लक्षिता भवेत्।**
- हम तभी यथार्थ रूप में भारतीय हैं, जब हमारे आचार और विचार में, हमारी संस्कृति दिखाई दे।
- **अभिलाषामः वयं, यत् विश्वस्य अभ्युदयाय**
- हम चाहते हैं कि विश्व के उत्थान के लिए
- **भारतीय संस्कृतेः, एषः दिव्यः सन्देशः लोके सर्वत्र प्रसरेत्।**
- भारतीय संस्कृति का, यह दिव्य सन्देश संसार में सर्वत्र फैले।
- **"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।**
- सब सुखी हों, सब रोगरहित हों।
- **सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ।।"**
- सब कल्याण देखें (पाएँ), कोई भी दुःखी न हो।

'जीवन-सूत्राणि

यक्ष प्रश्न पूछते हैं –

- किंस्विद् गुरुतरं भूमेः किंस्विदुच्चतरं च खात्?
  भूमि से (भी) भारी क्या है? आकाश से (भी) ऊँचा क्या है?
- **किंस्वित् शीघ्रतरं वातात् किंस्विद् बहुतरं तृणात्?।। 1**
  वायु से (भी) शीघ्रगामी क्या है? तिनकों से (भी) अधिक (असंख्य) क्या है?

युधिष्ठिर उत्तर देते है –

- **माता गुरुतरा भूमेः खात् पितोच्चतरस्तथा।**
  माता भूमि से (भी) भारी है। पिता आकाश से (भी) ऊँचा है।
- **मनः शीघ्रतरं वातात् चिन्ता बहुतरी तृणात्।।2**
  मन वायु से (भी) शीघ्रगामी है। चिन्ता तिनकों से (भी) अधिक (दुर्बल बनानेवाली) है।

यक्ष प्रश्न पूछते हैं –

- **किंस्वित् प्रवसतो मित्रं किंस्विन् मित्रं गृहे सतः?**

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

प्रवासी का मित्र कौन है? गृह में निवास करते हुए अर्थात् गृहस्थ का मित्र कौन है?

- **आतुरस्य च किं मित्रं किंस्विन् मित्रं मरिष्यतः?।। 3।।**
  रोगी का मित्र कौन है और मरनेवाले का मित्र कौन है?
  युधिष्ठिर उत्तर देते है –
- **सार्थः प्रवसतो मित्रं भार्या मित्रं गृहे सतः।**
  सहयात्रियों का समूह प्रवासी का मित्र है। गृह में निवास करनेवाले अर्थात् गृहस्थ की पत्नी मित्र है।
- **आतुरस्य भिषक् मित्रं दानं मित्रं मरिष्यतः।।4**
  रोगी का मित्र वैद्य है और मरनेवाले का मित्र दान है।
  यक्ष प्रश्न पूछते हैं –
- **किंस्विदेकपदं धर्म्यम् किंस्विदेकपदं यशः?**
  धर्म का मुख्य स्थान क्या है? यश का मुख्य स्थान क्या है?
- **किंस्विदेकपदं स्वर्ग्यम् किंस्विदेकपदं सुखम्?।। 5**
  स्वर्ग का मुख्य स्थान क्या है? और सुख का मुख्य स्थान क्या है?

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

युधिष्ठिर उत्तर देते है –

- **दाक्ष्यमेकपदं धर्म्यम् दानमेकपदं यशः।**
  धर्म का मुख्य स्थान उदारता है, यश का मुख्य स्थान दान है,
- **सत्यमेकपदं स्वर्ग्यम् शीलमेकपदं सुखम्।।6**
  स्वर्ग का मुख्य स्थान सत्य है और सुख का मुख्य स्थान शील है।

यक्ष प्रश्न पूछते हैं –

- **धान्यानामुत्तमं किंस्विद् धनानां स्यात् किमुत्तमम्?**
  अन्नों में उत्तम (अन्न) क्या है? धन में उत्तम (धन) क्या है?
- **लाभानामुत्तमं किं स्यात् सुखानां स्यात् किमुत्तमम्?।। 7**
  लाभों में उत्तम (लाभ) क्या है? सुखों में उत्तम (सुख) क्या है?

युधिष्ठिर उत्तर देते है –

- **धान्यानामुत्तमं दाक्ष्यं धनानामुत्तमं श्रुतम्।**
  अन्नों में उत्तम (अन्न) चतुरता है। धनों में उत्तम (धन) शास्त्र है।

- **लाभानां श्रेय आरोग्यं सुखानां तुष्टिरुत्तमा।।8।।**
  लाभों में उत्तम (लाभ) आरोग्य है। सुखों में उत्तम (सुख) सन्तोष है।
  यक्ष प्रश्न पूछते हैं –
- **किं नु हित्वा प्रियो भवति? किन्नु हित्वा न शोचति।**
  क्या त्यागकर (मनुष्य) प्रिय हो जाता है? क्या त्यागकर शोक नहीं करता?
- **किं नु हित्वार्थवान् भवति? किन्नु हित्वा सुखी भवेत्।।9**
  क्या त्यागकर धनवान् होता है? क्या त्यागकर सुखी हो जाता है?
  युधिष्ठिर उत्तर देते है –
- **मानं हित्वा प्रियो भवति क्रोधं हित्वा न शोचति।**
  अभिमान छोड़कर (मनुष्य) प्रिय हो जाता है, क्रोध त्यागकर शोक नहीं करता है,
- **कामं हित्वार्थवान् भवति लोभं हित्वा सुखी भवेत्।।10**
  कामना (इच्छा) त्यागकर धनवान् होता है और लोभ छोड़कर सुखी होता है।

ज्ञानसिन्धु कोचिंग क्लासेज
अनुशासनेन विद्या
अभ्यासेन विद्या
ज्ञानात्
मुक्तिः
||ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम्||